P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

छात्रों में मूल्य संवर्द्धन

दिनेश प्रताप सिंह
व्याख्याता,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
आई.एम.आर.,
गाजियाबाद, उ.प्र., भारत

सारांश

मूल्यों की शिक्षा बच्चों को घर से ही मिलती है परन्तु आज के भौतिकवादी युग की बढ़ती आपाधापी में कामकाजी अभिभावकों के पास समय का आभाव होने से शिक्षकों पर ही यह दायित्व भी आ जाता है क्योंकि माँ–बाप के बाद बच्चा अपने जीवन का अधिकांश समय शिक्षकों के साथ ही व्यतीत करता है। अध्यापक अपने आचरण, विद्यालय के प्रभावी वातावरण, प्रातःकालीन सभा, विषयसामग्री, पाठ्य–सहगामी क्रियाओं, नाटकों, खेलकूद, समाजसेवा, निष्ठा एवं ईमानदारी, अनुशासन एवं सामाजिक दायित्व आदि जीवन मूल्यों को आत्मसात् करा सकते हैं। यदि अध्यापक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाये रखें व अपनी जिम्मेदारी का समझे तो ऐसे अवसरों की कमी नहीं है जिनका उपयोग करते हुए वे छात्रों में मूल्य संवर्धन का बेहतरीन प्रयास कर सकते हैं।

मुख्य शब्द : अन्धानुकरण, समाहित, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सकारात्मकता।

प्रस्तावना

भारत अपनी कला, संस्कृति, दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव गर्व करता रहा है। उसे धर्मगुरू की उपाधि से विभूषित भी किया गया पर आज उसी धर्मगुरू भारत वर्ष के बच्चे पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर उसका अन्धानुकरण कर रहे हैं। इस क्रम में वे अपनी गौरवमयी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं और इसे विडम्बना ही कहा जाएगा कि आज देश के प्रायः सभी राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक और शैक्षिक मंचों से जीवन मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने की माँग जोर पकड़ती जा रही है। आज ऐसे समय में वे सभी इस बात को लेकर चिन्तित हैं कि मूल्यों का ह्रास हो रहा है तब मूल्यपरक शिक्षा बहुत अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

मूल्य शिक्षा को दो अर्थो में प्रयुक्त किया जाता है वे इस प्रकार हैं– (अ) मूल्यों की शिक्षा तथा (ब) मूल्य समाहित या मूल्यपरक शिक्षा। प्रथम के अन्तर्गत हम नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा इतिहास, भूगोल, जीव शास्त्र, रसायन शास्त्र, भौतिकशास्त्र आदि की शिक्षा की भाँति एक स्वतन्त्र विषय के रूप में देना चाहते हैं।[1]

मूल्य समाहित या मूल्यपरक शिक्षा में सभी विषयों में मनोवैज्ञानिक ढंग से मूल्य समाहित करके उक्त मूल्य के विकास पर बल देते है। आज के भारतीय संदर्भ में मूल्य शिक्षा का दूसरे अर्थ के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बालकों में मूल्यों की आवश्यकता व महत्व का समावेश कराना।
2. बालकों में मूल्यों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान कराना।
3. मूल्यों का समाज में उपयोग का अध्ययन।
4. मूल्यों से समाज को होने वाले लाभ का अध्ययन।
5. मूल्यों का सामाजिक परिवेश में अध्ययन।
6. मूल्यों का सामाजिक परिवेश में उपयोग।

परिवार वह संस्था है जहाँ बालक का समाजीकरण शुरू होता है और वही वह जीवन की प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करता है। परिवार का अपनापन उसे शिष्टाचार तथा सदाचार की शिक्षा देता है परन्तु आज हमारे समाज की व्यवस्था ऐसी होती जा रही है कि संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं और उनका स्थान एकाकी परिवारों ने ले लिया है जहाँ अभिभावक व बच्चे ही होते हैं। अभिभावकों के कामकाजी होने से उनके पास बच्चों को देने के लिए पैसा तो होता है पर समय नहीं। वे समय के अभाव की पूर्ति पैसे से करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं फलतः मूल्य संवर्धन हेतु अध्यापकों की भूमिका अधिक प्रभावी हो जाती है क्योंकि माता–पिता के बाद बच्चा अपने शिक्षकों के ही सबसे करीब होता है। वह अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय अपने अध्यापकों के साथ ही व्यतीत करता है। वह उन्हें अपना आदर्श मानता है। छात्र शिक्षक में कहीं न

कहीं अपनी छवि ढूँढता हैं छात्र शिक्षकों की गतिविधियों पर अत्यधिक ध्यान देते और उनका अनुकरण करने की कोशिश करते हैं।

अध्यापकों के बारे में यह कहा जाता है कि किसी भी बड़े परिवर्तन के लिए इससे अधिक उपयुक्त उपलब्ध वर्ग कोई नहीं हो सकता। शैक्षिक क्षमताओं के साथ–साथ अध्यापकों के उत्तरदायित्वों में अपने व्यवसाय तथा गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता लगातार बढ़नी चाहिए। इसी के साथ मानवमूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता सदा ही समाज की निगाह में रहती है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों का स्थान कमजोर हुआ है, यह सर्वविदित है। मूल्यों के सृजन तथा विकास की जिम्मेदारी अध्यापकों की है अतः प्रशिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रमों में मूल्यों की शिक्षा को उचित स्थान देने की प्राथमिकता मिलनी चाहिए।[2]

दैनिक क्रियाकलापों में प्रार्थना स्थल से विद्यालय बन्द होने तक अनेक ऐसे अवसर आते हैं जिनके माध्यम से अध्यापक छात्रों में मूल्यों का विकास कर सकता है आवश्यकता है तो बस अपनी जिम्मेदारी को समझने की व सकारात्मक दृष्टिकोण बनाये रखने की।

अगर अध्यापक छात्रों में मूल्यों का विकास करना चाहते हैं तो इसके लिए सबसे पहली आवश्यकता है कि छात्र अध्यापकों का कहना माने और उनकी बताई बातों पर अमल करने की कोशिश करें फलतः अध्यापकों को छात्रों के साथ अच्छा तादात्म्य स्थापित करना होगा तत्पश्चात् एक शिक्षक होने के नाते अपने छात्रों में मूल्यों का विकास करने के लिए शिक्षकों को स्वयं उन मूल्यों पर चलना होगा जिन मूल्यों को अपनाने की वे अपने छात्रों से अपेक्षा रखते हैं क्योंकि मूल्यों का अन्तर्वेशन करने के पश्चात् ही उनका प्रगटीकरण सरलतापूर्वक किया जा सकता है और तभी वे मूल्य छात्रों में परावर्तित हो सकेंगे। मूल्यों के प्रति स्वयं आस्थावान रहकर ही विविध पक्षों में छात्रों के लिए मूल्य निर्माण का कार्य किया जा सकता है अन्यथा 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' वाली स्थिति आ सकती है। गाँधी जी के अनुसार–

''मेरे विचार से सभी धर्मो में जो सामान्य सत्य हो, वे सभी छात्रों को बताये जाने चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम शिक्षकों को इन सत्यों का अपने जीवन में उतारना होगा। शिक्षक के आचरण का अनुकरण करके ही बच्चे सत्य एवं न्याय जैसे जीवनमूल्यों को जो कि सभी धर्मो का आधार है, सीख सकेंगे। ये जीवनमूल्य शब्दों या पुस्तकों के माध्यम से नहीं सिखाये जा सकते।''

अतः जब शिक्षक की कथनी और करनी में अन्तर नहीं होगा, तब उसके द्वारा प्रस्तुत आचरण छात्रों में मूल्यों के विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।[3]

वातावरण का व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है इसलिए एक शिक्षक होने के नाते हमारा दायित्व बनता है कि हम छात्रों में अच्छे मूल्यों का संवर्धन करने हेतु उन्हें अच्छा वातावरण देने का प्रयत्न करें। विद्यालय में सभी छात्रों के साथ समान व्यवहार किया जाए। सबको समान अधिकार दिए जाए और सबके साथ उचित न्याय किया जाए। विद्यालय की उच्च परिपाटी बच्चों में उच्च आदर्शो एवं मूल्यों के विकास में विशेष सहायक होती है किसी ने कहा है–Value are not taught but caught विद्यालय में प्ररेणादायी ध्येय वाक्य, महापुरूषों के उद्बोधन व देशभक्त महापुरूषों के चित्र लगाकार मूल्यों के विकास हेतु उपयुक्त वातावरण तैयार किया जा सकता है।

शिक्षा आयोग ने इसी बात को इन शब्दों में व्यक्त किया है–

''विद्यालय का वातावरण, शिक्षकों का व्यक्तित्व तथा विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाँए छात्रों को मूल्योन्मुख बनाने में विशेष भूमिका निभाते हैं। विद्यालय की प्रातःकालीन सभा, पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ या क्रियाएँ सभी धर्मो के धार्मिक उत्सवों का आयोजन, कार्यानुभव, खेलकूद, विषय क्लब, समाज सेवा ये सभी छात्रों में सहयोग व पारस्परिक सद्भाव, निष्ठा एवं ईमानदारी, अनुशासन एवं सामजिक दायित्व आदि जीवन–मूल्यों को आत्मसात् कराने में सहायक होते हैं।''

अध्यापक का कार्य शिक्षा देने तक ही सीमित न होकर छात्रों का सर्वांगीण विकास करना भी है अतः शिक्षक का यह कर्तव्य बनता है कि पाठ्य–पुस्तकों के किसी भी पाठ को पढ़ाते समय उनमें निहित आदर्शो और सिद्धान्तों को बच्चों के सामने उजागर करें और यह कार्य भाषा व इतिहास इन दो विषयों के माध्यम से तो बड़ी आसानी से किया जा सकता है क्योंकि इनमें समाज के समस्त विश्वासों, आदर्शो और सिद्धांतों का समावेश होता है। बच्चे तो स्वभावतः संवेदनशील होते है। बस हमें उन्हें समाज सम्मत् कार्यो की जानकारी देनी होगी।

शिक्षकों द्वारा छात्रों को वास्तविक जीवन के उदाहरण दे, मूल्यों की ओर प्रेरित करे उन्हें अपने देश के ऐसे महान व्यक्तियों के उदाहरण देने चाहिए जो आज भी अपने त्याग, महानता, समर्पण, देशभक्ति आदि के कारण याद किये जाते हैं जैसे दधीचि का त्याग, पन्नाधाय का बलिदान, अभिमन्यु की वीरता, युधिष्ठिर की सत्यता, महाराणा प्रताप का देशप्रेम आदि। महान वैज्ञानिकों, गणितज्ञों आदि की कहानी सुनकर उनमें परिश्रम व लगन के प्रति सम्मान की भावना जागृत कर सकते हैं जैसे एडीसन बाल्यकाल में तो साधारण बालक था पर अपने कठोर परिश्रम के कारण ही बिजली का अविष्कार कर सका। इससे प्रेरणा लेकर औसत दर्जे के विद्यार्थी भी परिश्रम करने की कोशिश करेंगे।

शिक्षाप्रद चलचित्रों, नाटकों आदि के माध्यम से भी बच्चों को मूल्याधारित शिक्षा दी जा सकती है। अपने खाली समय में छात्रों को मूल्यप्रद नाटक खेलने को प्रेरित कर सकते हैं जिससे छात्र खेल–खेल में कुछ प्रभावी मूल्य सीखने की कोशिश कर सकते हैं जैसे राजा हरीशचन्द्र, श्रवण कुमार आदि।

शिक्षक विद्यार्थियों को प्रेरित कर सकते हैं कि यदि उन्होंने सप्ताह में कोई अच्छा कार्य या किसी की मदद की तो सभी विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँ इसके लिए सप्ताह का एक दिन निर्धारित किया जा सकता है तथा सबसे अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थी को पुरस्कृत व प्रोत्साहित भी किया जा सकता है। इसके माध्यम से एक ओर तो विद्यार्थियों को डायरी लेखन हेतु प्रेरित किया जा सकता है साथ–ही–साथ सभी विद्यार्थी प्रयास करेंगे कि वे भी अपने अनुभव साथियों के साथ बाँट सकें, इसके

द्वारा उनमें बड़ी आसानी सह सहयोग, सहानुभूति आदि मानवीय मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

शिक्षक द्वारा अपने आस पास के परिवेश में छात्रों के माध्यम से एक विशेष अभियान किया जा सकता है जैसे मलिन बस्ती, पार्को, गाँवों आदि में सफाई करके, अनपढ़ बच्चों को पढ़ाकर लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास कर सकते हैं जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में जिम्मेदारी की भावना एवं स्वस्थ विचारों का विकास करने में मदद् मिलेगी।

निष्कर्ष व सुझाव

प्रत्येक कार्य को करने के दो रास्ते होते हैं एक गलत और एक सही। गलत रास्ता हमेशा सरल होता है और सही रास्ता कठिन। अतः व्यक्ति गलत कार्यो की ओर आसानी से प्रेरित होते हैं। एक शिक्षक होने के नाते हमें अपने विद्यार्थियों को सही व गलत में फर्क करना सिखाना होगा। उन्हें सिखाना होगा कि सही रास्ता कठिन जरूर है पर उस पर चलकर वे एक आदर्श व्यक्ति बन सकते हैं। बच्चों में भय पैदा न करें कि अगर ज्यादा नम्बर लाओगे तभी सफल होगे वरन उनकी सोच सकारात्मक बनाएँ। उन्हें बताएँ कि शिक्षा का अंतिम लक्ष्य जीविकोपार्जन ही नहीं वरन् अच्छा इंसान बनना भी है। अगर बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस., पी.सी.एस. आदि बन गए पर उनमें मानवीय मूल्य नहीं है। वे अच्छे इंसान नहीं है तो यह उपलब्धियाँ किसी काम की नहीं है। एक अच्छा मानव बनना भी जरूरी है। इसके लिए विद्यालयों में महापुरूषों के जन्मदिवस मनाए जाएँ ताकि विद्यार्थी उनसे प्रेरणा ले। केवल खानापूर्ति के लिए उनका आयोजन न हो क्योंकि ये वे क्षण होते है। जब बच्चों में यह धारणा बनाई जा सकती है कि अच्छे कार्य करने वाले कभी मरते नहीं है वे युग–युग तक याद किये जाते हैं।

अंत टिप्पणी

1. *पाठक एवं त्यागीः 'शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त' पृ0 56*
2. *राजपूत, जगमोहन सिंहः 'जिम्मेदारी से पीछे नहीं हट सकते अध्यापक', अमर उजाला 5 सितम्बर 2007*
3. *पाठक एवं त्यागीः 'शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त' पृ0 570*
4. *दुश्यंत कुमार 'साये में धूप'।*
5. *अग्रवाल पब्लिकेशनः 'शिक्षा में नये आयाम'।*
6. *सक्सेना, एन.आर.एस.: 'शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आधार'।*